मसीह का प्रचार करने का क्या अर्थ है (8:5, 12)

प्रेरितों 8:5 में हम पढ़ते हैं, ''और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में *मसीह का प्रचार* करने लगा।'' सिंगमैन[1] री ने एक बार कहा था कि ''कोरिया की सबसे बड़ी आवश्यकता मसीह के प्रचार के लिए भक्त लोगों से बढ़कर कोई और नहीं है।''[2] हम इसमें आगे जोड़ेंगे: ''संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता कोई और नहीं है!''[3] ''मसीह का प्रचार'' करने का क्या *अर्थ* है? ''हम मसीह का प्रचार करते हैं'' ये शब्द आम तौर पर चर्च के बैनरों पर लिखे हुए देखे जाते हैं, परन्तु कहना एक बात है और करना दूसरी।

फिलिप्पुस और सामरियों की कहानी हमें अच्छी तरह बताती है कि ''मसीह का प्रचार'' करने के लिए वास्तव में क्या करने की आवश्यकता है।

मसीह का व्यक्तित्व (8:5)

कोई शक नहीं कि फिलिप्पुस ने सामरियों में ''मसीह का प्रचार'' करते हुए मसीह के विषय में उन महान सच्चाइयों का प्रचार किया जिनका आत्मा की प्रेरणा प्राप्त अन्य प्रचारकों ने किया था। अर्थात यीशु द्वारा भविष्यवाणी को पूरा करने (2:16; 8:35), उसके जीवन और आश्चर्यकर्मों के वर्णन (2:22; 10:38), उनके लिए क्रूस पर उसकी मृत्यु (2:23; 8:32; 10:39), मृतकों में से उसके जी उठने (2:32; 10:40), परमेश्वर के दाहिने हाथ उठाए जाने और स्वर्ग में उसके राज्य (2:30-36), और वापस आने के उसके वायदे (10:42) के तथ्यों का प्रचार। ये सभी सच्चाइयां फिलिप्पुस के प्रचार का आधार और सार रही होंगी, किन्तु ''मसीह का प्रचार'' करने में और बातें भी शामिल हैं।

मसीह का राज्य (8:12)

आयत 12 में कहा गया है, ''जब उन्होंने [सामरियों ने] फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग ... बपतिस्मा लेने लगे।'' आयत 12 स्पष्ट कर देती है कि ''मसीह का प्रचार'' करने के लिए यीशु के बारे में महान आधारभूत सच्चाइयों से बढ़कर कुछ और भी शामिल होता है।

जॉन ए. रेडहैड, ने अपनी पुस्तक *गेटिंग टू नो गॉड* में यह बात उठाई थी कि आम तौर

पर हमारी धार्मिक मान्यताएं अव्यावहारिक होती हैं और हमें परमेश्वर में अपने विश्वास का *इस्तेमाल* करने के योग्य होने के लिए कुछ ''दस्ते'' चाहिए।[4] यही बात मसीह का प्रचार करने के लिए सत्य है। यदि मुझे और आपको ''मसीह का प्रचार'' करना है तो लोगों को कुछ ''दस्ते'' देने भी जरूरी हैं जिन्हें वे पकड़ सकें। यह बताए बिना कि लोग उन तथ्यों का लाभ कैसे उठा सकेंगे, यीशु के बारे में तथ्यों को प्रस्तुत करना ऐसे है जैसे किसी को जटिल हथियार यह बताए बिना देना कि इसे इस्तेमाल कैसे करना है। बहुत साल पहले एक सेल्ज़मैन ने अमेरिका के एक दूरस्थ गांव में कोशिश करके एक ऐसे बूढ़े आदमी को फ्रिज बेच दिया जिसने कभी ऐसा चमत्कार नहीं देखा था। सेल्ज़मैन कुछ दिन बाद लौटकर आया और उसने उस आदमी से पूछा, ''आपको अपना नया फ्रिज कैसा लगा?'' ''बहुत अच्छा,'' उस आदमी ने उत्तर दिया, ''पर उस बर्फ़ रखने की छोटी सी ट्रे में बर्फ़ लगाना बहुत मुश्किल और थका देने वाला काम है।'' नये सामान की तरह ही, सच्चाई को भी खोल कर समझाना और उसकी प्रासंगिकता बताना भी ज़रूरी है।

जब फिलिप्पुस ने ''मसीह का प्रचार'' किया तो उसका प्रचार व्यावहारिक था। आयत 12 टिप्पणी करती है कि ''मसीह का प्रचार'' करते हुए उसने *परमेश्वर के राज्य* के बारे में प्रचार किया। अध्याय एक से अब तक पहली बार हमने ''राज्य'' शब्द का प्रयोग देखा है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में ''यह सब किसके बारे में है?'' में हमने, ध्यान दिया था कि सुसमाचार के वृत्तांतों में यीशु द्वारा स्थापित होने वाले संस्थान के लिए मुख्य शब्द ''राज्य'' का प्रयोग किया गया है, जबकि प्रेरितों के काम में ''कलीसिया'' शब्द का। अध्याय 2 में राज्य/कलीसिया की स्थापना से लेकर, हमने ''कलीसिया'' के बारे में तो पढ़ा (प्रेरितों 5:11; 8:1, 3), परन्तु राज्य के बारे में नहीं। फिलिप्पुस ने ''राज्य'' शब्द का प्रयोग क्यों किया? क्योंकि सामरी भी मसीह के आने की राह देख रहे थे (उन्होंने अपने यहूदी पड़ोसियों से सुन रखा था) जिसने एक राज्य स्थापित करना था (यूहन्ना 4:25)।[5]

''परमेश्वर का राज्य'' मूलत: ''परमेश्वर के शासन'' की ओर संकेत है, चाहे वह पृथ्वी पर हो (विशेष अर्थ में कलीसिया में[6]) अथवा स्वर्ग में (याकूब 2:5)। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस संदर्भ में, फिलिप्पुस का ज़ोर कलीसिया पर था। कलीसिया का प्रचार किए बिना ''कोई यीशु मसीह का प्रचार'' पूरी तरह से नहीं कर सकता क्योंकि मसीह कलीसिया का बनाने वाला है (मत्ती 16:18), मसीह कलीसिया के लिए मरा (प्रेरितों 20:28), मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 1:22, 23), और मसीह कलीसिया को जीवन देने वाला और उसका उद्धारकर्त्ता है (इफिसियों 5:23-25)!

फिलिप्पुस ने ''परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार'' अर्थात कलीसिया का प्रचार करते हुए क्या कहा होगा? उसने यह शुभ समाचार प्रचारित किया होगा कि राज्य/कलीसिया स्थापित हो चुकी है। उसने उस संगति के बारे में भी बताया होगा जो कलीसिया में विद्यमान थी। उसने विस्तार से बताया होगा कि कलीसिया के सदस्यों को आराधना, परमेश्वर और दूसरों की सेवा के लिए कैसे इकट्ठे होना है।

मसीह का नाम (8:12)

फिलिप्पुस ने ''मसीह का प्रचार'' करके ''यीशु के नाम का'' भी प्रचार किया। अध्याय 3 और 4 में अपने अध्ययन में, हमने ज़ोर दिया था कि ''यीशु'' के नाम से वह सब पता चलता है, जो वह वास्तव में है। लोगों को उसके पवित्र नाम में बपतिस्मा दिया गया था (2:38)। प्रेरितों ने यीशु के नाम से लोगों को चंगा किया था (3:16)। थोड़ी देर के बाद चेलों को यह नाम पहनने में गर्व का अहसास हुआ (11:26; 26:28)।[7] एक प्रचारक ने एक बार घोषणा की, कि ''नाम में कुछ नहीं रखा!'' तुरन्त, श्रोताओं में से एक आदमी चिल्लाया, ''बालज़बूल (शैतान) की महिमा हो!'' उस आदमी ने लोगों को यह अहसास दिलाने के लिए चौंका दिया कि ''नाम में कुछ'' *है* ! अफ्रीका में एक सभा स्थल पर ये दो पद इतने मोटे-मोटे करके पेंट किए गए हैं कि उन्हें सभी देख सकते हैं: ''तुम को *मसीह* की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार''; ''क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (रोमियों 16:16; प्रेरितों 4:12)। यदि हम ''मसीह का प्रचार'' करते हैं, तो हमें उसके नाम को महिमा देनी चाहिए।

उद्धार के लिए मसीह की शर्तें (8:12)

अन्त में, फिलिप्पुस ने सामरियों में ''मसीह का प्रचार'' करके बपतिस्मे का प्रचार किया। यदि ''मसीह का प्रचार'' करने में बपतिस्मा शामिल न होता, तो सामरियों को बपतिस्मा लेने के बारे में पता न चलता। कालान्तर में, प्रचारक आमतौर पर विज़ुअल एड प्रस्तुति अर्थात चित्रों द्वारा दिखाते थे कि ''मसीह का प्रचार'' करने में बपतिस्मा आवश्यक है। प्रचारक अपने सुनने वालों को बताता है कि, ''मैं लड़कों में से एक को निर्देश देने वाला हूं।'' वह एक छोटे लड़के को सामने बुलाकर उसके कान में कुछ कहता है। लड़का भाग कर बाहर जाता और एक पत्थर लेकर लौट आता है। प्रचारक अपने सुनने वालों से पूछता है, ''तुझ्हें क्या लगता है कि मैंने इसे क्या करने के लिए कहा होगा?'' कइयों का उत्तर था, ''आपने उसे बाहर जाकर एक पत्थर लाने के लिए कहा होगा।'' प्रचारक फिर कहता है, ''तुझ्हें ऐसा क्यों लगा कि मैंने इसे यही कहा था?'' ''क्योंकि उसने ऐसा ही *किया*।'' ''हां,'' प्रचारक मुस्कुराता हुआ कहता है, ''इसी प्रकार जब हम देखते हैं कि सामरियों ने क्या किया, तो हमें पता चल जाता है कि फिलिप्पुस ने उन्हें क्या बताया होगा।''

मसीह और बपतिस्मे को अलग नहीं किया जा सकता। यीशु ने बपतिस्मा लिया (मत्ती 3:13-17)। उसने बपतिस्मे की आज्ञा दी (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16)। बपतिस्मा उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने की समानता में होता है (रोमियों 6:3-6)। हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं (गलतियों 3:26, 27)। यदि मैं और आप पूरी तरह से ''मसीह का प्रचार'' करते हैं, तो बपतिस्मा हमारे संदेश का अनिवार्य भाग होना चाहिए।[8]

सारांश

हमने देखा कि मसीह का प्रचार करने का क्या अर्थ है। मसीह के प्रचार में न केवल

उसके व्यक्तित्व की महान सच्चाइयां ही, बल्कि राज्य/कलीसिया के प्रचार में, उसके नाम का प्रचार और बपतिस्मे का प्रचार भी शामिल है। अन्य विषयों का उल्लेख भी किया जा सकता था,[9] परन्तु यह ध्यान देने के लिए कि ''मसीह का प्रचार'' कितना महत्वपूर्ण और व्यापक है, ये ही पर्याप्त हैं।

जिस प्रकार कुछ लोग ''मसीह का प्रचार'' करते हैं, उसकी तुलना उस कलीसिया से की जा सकती है जिसके बारे में मैं पढ़ता हूं। इस कलीसिया ने प्रार्थना के भवन के एक तरफ बड़ा सा साइन बोर्ड लगाया: ''हम क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं।'' समय बीतने पर, कलीसिया में कई लोग लोहू के बलिदान की बात से व्याकुल हो गए, सो ''क्रूस पर चढ़ाए हुए'' वाक्य पर पेंट कर दिया गया। फिर वहां यह वाक्य लिखा दिखने लगा, ''हम मसीह का प्रचार करते हैं।'' थोड़ी देर के बाद, एक नया प्रचारक आया; वह यीशु की कहानी से अधिक सामयिक घटनाओं पर ध्यान देता था, सो ''मसीह का'' लिखे हुए पर पेंट कर दिया गया और अब वहां यह लिखा रह गया, ''हम प्रचार करते हैं।'' अन्त में, कलीसिया ने निर्णय लिया कि लोगों तक पहुंचने के लिए अब प्रचार कोई माध्यम नहीं रह गया, सो उन्होंने ''प्रचार करते हैं'' शब्दों पर पेंट कर दिया और वहां अब वे नाटक और संगीत सभाएं करने लगे। फिर वहां पर केवल यही लिखा रह गया, ''हम।'' परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम ''मसीह और उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के प्रचार'' में से *किसी* भी भाग को न निकालें!

इस पाठ में जिन विषयों पर हमने विचार किया है, उनका आपस में गहरा सम्बन्ध है क्योंकि जब हम यीशु के *नाम* से *बपतिस्मा* लेते हैं, तो परमेश्वर हमें *राज्य/कलीसिया* में मिला लेता है जिसे मसीह का *नाम* मिला है (प्रेरितों 2:38, 41, 47; कुलुस्सियों 1:13; रोमियों 16:16)। क्या *आप* यीशु के नाम से बपतिस्मा लेना पसंद करेंगे ताकि परमेश्वर *आपको* उसके राज्य/कलीसिया में मिला सके? आयत 12 पर पुन: ध्यान दें: ''जब उन्होंने [सामरियों ने] फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।'' उन्होंने विश्वास करके आज्ञा का पालन किया! उन्होंने प्रतीक्षा नहीं की; वे हिचकिचाए नहीं; उन्होंने वही किया जो परमेश्वर चाहता था कि वे करें![10] क्या आप भी आज वैसा नहीं करेंगे?

विज़ुअल-एड नोट्स

बोर्ड के उदाहरण ''हम क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं'' को प्रस्तुत किया जा सकता है। बोर्ड पर ऐसा चिह्न बनाएं और एक-एक करके शब्दों को मिटा दें।

एक प्रचारक ने इस उदाहरण की नकल करके इस साइन बोर्ड को एक पंक्ति में एक शब्द लिखकर दीवार पर लटका दिया। उसके पास इस बोर्ड पर ''बढ़ती हुई'' एक *झाड़ी* थी, जो एक बार बढ़ने पर एक शब्द को ढक लेती थी। यदि उपयुक्त हो तो आप एक छोटे लड़के को पत्थर लाने के लिए भेजकर उन मार्गप्रदर्शक प्रचारकों द्वारा प्रयुक्त ढंग का

इस्तेमाल कर सकते हैं कि मसीह का प्रचार करने में बपतिस्मे की शिक्षा शामिल है।

प्रवचन नोट्स

बर्टन कॉफ़मैन ने प्रेरितों के काम पर अपनी व्याख्या में ''मसीह का प्रचार करने का क्या अर्थ है'' पर काफ़ी नोट्स दिए हैं (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स* [ऑस्टिन, टैक्स.: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1976], 159–61), उसने इस विषय पर द *गॉस्पल इन गॉथम* में प्रवचन भी दिया ([न्यूयॉर्क: लेखक के द्वारा, n.d.], 217–24)।

पादटिप्पणियां

[1]कई बार अंग्रेज़ी में इसे ''सिगमंड'' कहा जाता है। सिंगमैन री एक महान कोरियाई नेता था। [2]यह कथन बर्टन कॉफ़मैन द्वारा द *गॉस्पल इन गॉथम* (न्यूयॉर्क: लेखक के द्वारा, n.d.), 217 में उद्धृत किया गया है। [3]देखिए 1 कुरिन्थियों 1:23, 24; 2:2; गलतियों 6:14. [4]जॉन ए. रेडहैड, *गैटिंग टू नो गॉड (एण्ड अदर सरमन्ज़)* (न्यूयॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1954), 8. [5]व्यवस्था की पांच पुस्तकों से (जिन्हें वे मानते थे), सामरियों को मूसा के जैसे एक भविष्यवक्ता के इस संसार में आने के बारे में पता चला था (व्यवस्थाविवरण 18:15, 18, 19)। क्योंकि भविष्यवक्ताओं का अभिषेक किया जाता था, सामरियों द्वारा मसीह के लिए कुछ यहूदी धारणाओं के साथ यहूदी शब्द ''मसायाह'' (''अभिषिक्त'') को उपयुक्त मानना स्वाभाविक था। [6]मत्ती 16:18, 19 में ध्यान दें जिसमें ''राज्य'' और ''कलीसिया'' शब्द को एक दूसरे के लिए इस्तेमाल किया गया है। ''रूढ़िवादी और सुधारवादी दोनों प्रकार के विद्वान युगों से इसे प्रमाण के रूप में देखते आए हैं कि कलीसिया और परमेश्वर का राज्य एक ही संस्था हैं'' (कॉफ़मैन, 157)। [7]इस शृंखला में बाद के एक भाग में 11:26 पर नोट्स देखिए। [8]इस बात को अगले पाठ में खोजे के मनपरिवर्तन में विस्तार से दिखाया गया है। [9]उन ज़िम्मेदारियों को शामिल किया जा सकता है जो मसीही होने के नाते हमें दी गई हैं। [10]मत्ती 6:33; इब्रानियों 4:7; 2 कुरिन्थियों 6:2; सभोपदेशक 12:1 पर ध्यान दीजिए।